Std IX HINDI

[बात अठन्नी की]

उद्देश्य :- यह कहानी लेखक सुदर्शन जी द्वारा लिखी गयी है। इस कहानी में न्याय व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है साथ ही समाज में उच्च एवं प्रतिष्ठित पदों पर आसीन लोगों पर भी प्रहार किया गया है। ऐसे लोग रिश्वत लेकर अथवा अपनी शक्ति का प्रयोग करके अपनी गलति छुपा लेता है और शान से अपना जीवन यापन करता है। जब कि एक निर्धन व्यक्ति को छोटी से गलति के लिए कारावास का दंड भोगना पड़ता है।

सारांश :- रसीला इंजीनियर बाबू जगतसिंह के यहाँ नौकर था। दस रुपये उसका वेतन था। गांव में उसके बूढ़े पिता, पत्नी, एक लड़की और दो लड़के रहते थे। उस वेतन में सभी का गुजारा कठिन था। तनख्वाह बढ़ाने की बात करने पर इंजीनियर बाबू इन्कार कर देते। इस घर को वह छोड़ कर कहीं जाना नहीं चाहता था।

जिला मजिस्ट्रेट शेख सलीमुद्दीन इंजीनियर बाबू के पड़ोस में रहते थे। उनके चौकीदार रमजान और रसीला में दोस्ती थी। रसीला को उदास देखकर रमजान ने कारण पूछा। उसने बताया कि खत द्वारा बच्चे की बीमारी की सूचना प्राप्त हुई मगर उन्हें मदद भेजने के लिए पैसा नहीं है। इंजीनियर बाबू पेशगी भी नहीं देते थे। यह सुनकर अपनी कोठरी से कुछ रुपये लाकर रसीला को दे दिया। रसीला अपने मालिक और रमजान के चरित्र की तुलनात्मक चिन्तन करता है।
बच्चे के स्वस्थ हो जाने पर रसीला रमजान का कर्ज चुका देता है। केवल अठन्नी बाकी रह गयी।
एक दिन रसीला ने किसी सज्जन को किसी काम के लिए इंजीनियर बाबू को 500 रुपये देने की बात सुनी। यह बात उसने अपने दोस्त रमजान को बताया। यह सुनकर रमजान ने अपने मालिक के विषय में यह बताया कि उसके मालिक तो 1000 रुपये से कम लिए बिना बात ही नहीं करते।
एक दिन इंजीनियर साहब ने रसीला से पाँच रुपये की मिठाई मँगाई। रसीला ने साढ़े चार रुपये की मिठाई खरीदी और रमजान को अठन्नी लौटाकर अपना कर्ज चुकता कर दिया। मिठाई देखकर इंजीनियर साहब को शक हुआ। उन्होंने रसीला को धमकाया और हलवाई के सामने ले जाने की बात कही। उसने अपनी गलती की माफी माँगी, लेकिन इंजीनियर बाबू का गुस्सा रसीला को पीटने पर भी शान्त न हुआ और उसे थाने में ले गये। दूसरे दिन मुकदमा कचहरी में पेश हुआ। मुकदमा शेख साहब की अदालत में था। रसीला ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। शेख साहब ने उसे छह महीने की सजा सुनाई। फैसला सुनकर रमजान बहुत दुःखी हुआ।

Scanned with CamScanner

रमजान के आँखों में खून उतर आया। उसने कहा कि यह इंसाफ नहीं अंधेर है, क्यों कि बात केवल अठन्नी की थी।

गृह कार्य

प्रश्न :-

1) रसीला कौन था? उसका परिचय दीजिए। वह यह नौकरी छोड़कर क्यों नहीं जाना चाहता था?

2) इंजीनियर बाबू जगत सिंह किस प्रकार के इन्सान थे?

3) रमजान कौन था? रसीला रमजान के आगे आँख क्यों नहीं उठा पाता था?

4) रसीला और रमजान दोनों जिन लोगों के यहाँ काम करते थे, दोनों में कौन सी बात समान थी?

5) 'शेख साहब न्यायप्रिय आदमी थे'- कथन में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।

6) रमजान ने दुनिया को अंधेर नगरी क्यों कहा?

व्याकरण

1) संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियाओं में ई, त्व, ता, पन, पा, आवट, आहट, य आदि प्रत्यय लगाकर भाव वाचक संज्ञा बनाई जाती है। जैसे लंबा + ई = लंबाई

पुस्तक से सीख कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया द्वारा निर्मित भाववाचक संज्ञा सीख कर गृह कार्य कॉपी में लिखें।

2) वचन का अभ्यास कर गृह कार्य कॉपी में लिखें।

Scanned with CamScanner